इन्सान की शक्ति

एक चमत्कार

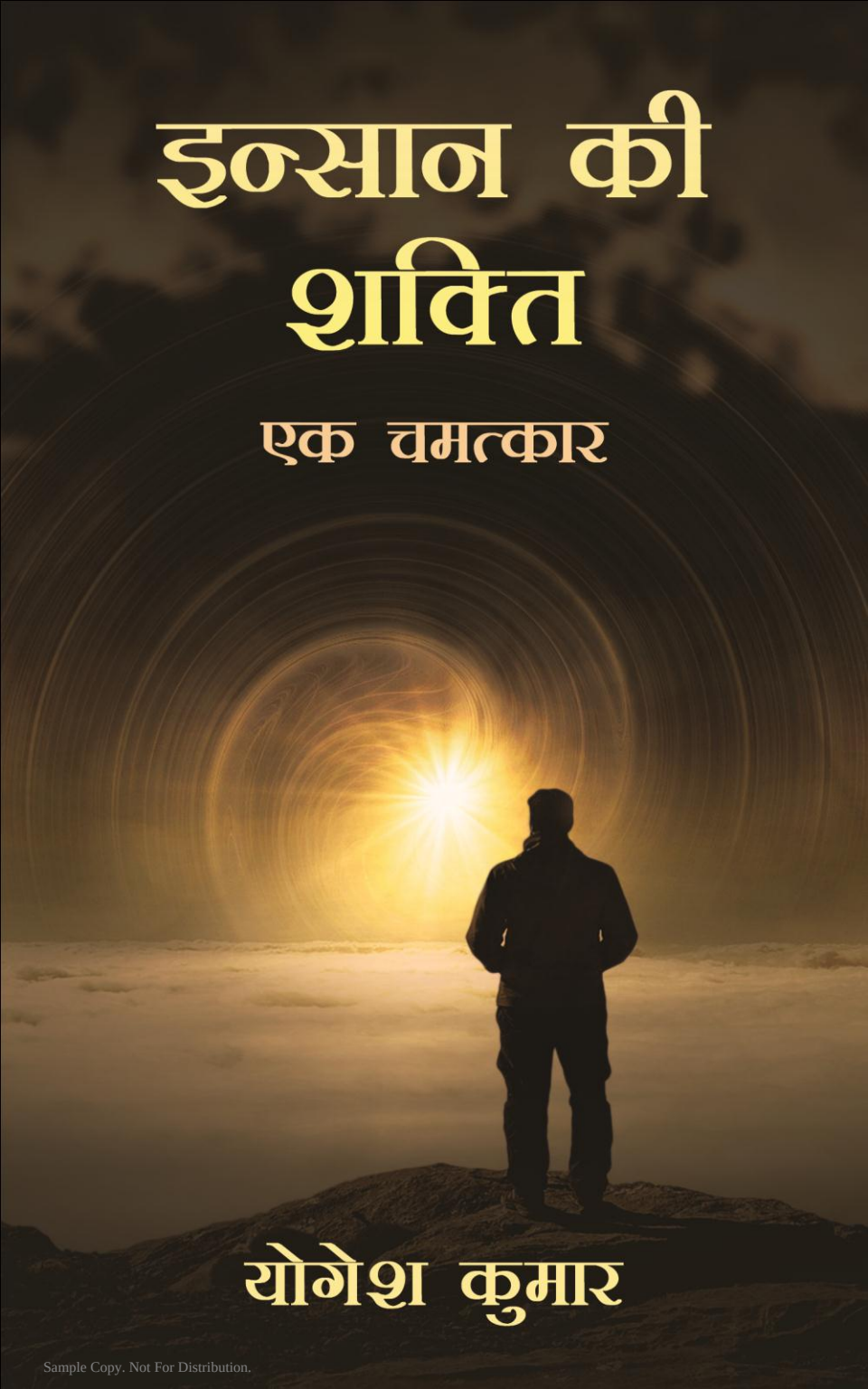

योगेश कुमार

Sample Copy. Not For Distribution.

इन्सान की शक्ति

एक चमत्कार

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, 2018, Yogesh Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-5457-1317-4

Price: ₹ 465.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

इन्सान की शक्ति

एक चमत्कार

योगेश कुमार

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

इन्सान की शक्ति

आज चार दिन हो गए थे मुम्बई में एक औरत ने एक रोटी पर एक अचार सा कुछ रख कर दिया, बोली मैं तेरी खाला हूँ। रोटी खाए हुए चार दिन हो गए हैं। रोटी भी लगती थी चार दिन की बासी है जो सफेद थी बस खा ली घर पर होता तो दस ही खा जाता यहाँ तो एक ही थी। दिमाग में एक आइडिया आया कि चार गिलास पानी पी लूँ तो पेट भर जाएगा, जानता था कि मर भी सकता हूँ रोटी पर जो अचार सा रखा था वो साँप का मुँह था। उस औरत ने साँप का मुँह मुझे दिया था। बाकी हिस्सा अपने बच्चों को दे दिया आइडिया काम कर गया। मेरा पेट भर गया।

अचानक बारिश शुरू हो गई थी मैं सामने बने बस स्टेंड की ओर भीगने से बचने के लिए जाने लगा और सोच रहा था बिन कपड़े यहाँ नहीं रह सकता हूँ। तभी नज़र एक बैग पर पड़ी जिसमें तीन जोड़ी पेंट और शर्ट थीं, ऐसालगा जैसे मुराद पूरी हो गई हो ऐसा नहीं था कि घर से निकाल दिया गया था बस अपनी मर्ज़ी से आया था।

वजह भी अजीब थी कोई कई महीने से मुझसे बात नहीं कर रहा था, सब कुछ अजीब सा था घर पर।

Sample Copy. Not For Distribution.

तभी तीन लड़के बस स्टेंड पर आए मुझसे बोले ऐड़े कहाँ से आया है। मैं बोला दिल्ली से, एक बोला वापस लौट जा ऐड़े।

मैंने कहा छः महीने के बाद जाऊँगा। ऐसालगा कि भगवान ने कहा है। एक बोला क्यों पहले क्यों नहीं मैंने कहा क्योंकि मेरा वहाँ कोई नहीं है। बस इसीलिए फिर से बोल रहा हूँ ऐड़े लौट जा गाँव, मुंबई में कोई तेरा है। मैं बोला एक खाला हैं, कहाँ रहती हैं? मैं बोला वह पास की झुग्गी में रहती हैं। वो बोला नहाएगा क्या मैं बोला हाँ।

मैं नहीं जानता था कि आज जैसा नहाना छह महीने तक नहीं होगा। मैं उसके साथ एक पास के स्नान घर में चला गया। जहाँ उसने पाँच रूपये दिये बदले में एक साबुन मिला और एक बाल्टी पानी। मैं पानी से खूब अच्छी तरह नहाया था। ऐसाकभी नहीं नहाया था।

यह कहानी 2001 से शुरू होती है। मैं एक आई0 टी0 आई0 का स्टूडेण्ट था। दिल्ली में रहता था, मेरी जिंदगी में सब कुछ ठीक चल रहा था तभी एक दोस्त के कहने पर या दबाव में भांग खा ली। तब तो कुछ नहीं हुआ पर बाद में मेरी जिंदगी बदल गई। मुझे बहुत भयानक डर लगने लगा वो भी मौत का ऐसा लगता था कि टी0 वी0 पर मेरे बारे में चलता रहता था कि घर पर भी मुझसे कोई बात नहीं करता था।

बस सब कुछ उलटा हो रहा था टाइम के साथ ही आत्म हत्या का दबाव बढ़ रहा था। मैं हर दिन फाँसी

Sample Copy. Not For Distribution.

लगाने की कोशिश करता था। मैं रस्सी में गाँठ लगाना भूल जाता था। आँसू तो निकलने बंद हो गए थे।

तीन–चार दिन में एक या दो घण्टे ही सोता था। बस कोई ओर होता तो मर गया होता कई बार सोचता मैं कहाँ फँस गया कभी लगता ये एक परीक्षा है जिसके बाद मुझे बहुत सा ईनाम मिलेगा। मैं अपने आधे शरीर को खो चुका था। अब मेरा आधे से भी ज़्यादा वज़न कम हो गया था।

कई बार पढ़ने की कोशिश करता पर किताबों के अक्षर बदल जाते थे ऐसा ही चलता रहा एक महीना हो गया था हर वक़्त ना सोने की वजह से नींद आती रहती थी शरीर के अंग अपना काम ठीक से नहीं कर पाते।

सोने की कोशिश करता तो लगता कोई मार देगा कई बार घर से जाने की सोचता पर मारे डर के नहीं जा पाता फिर वो दिन आया। फरवरी की 27–28 तारीख सन 2001 में, मैं अपने घर से निकला एक इम्तिहान या पेपर के लिए आज सा दिन मैंने नहीं देखा बस मैं बैठा इम्तिहान देने के लिए निकला। सारी दिल्ली सजी थी। बड़े–बड़े होरडिंग, फ्लाई ओवर और जहाँ से भी गुज़रता गाड़ियों की भीड़ मेरी बस के पीछे आती–जाती और रोड के दूसरी ओर कोई गाड़ी नहीं रहती।

कई बार सोचता कि इस पुल से बस एक बार और गुज़रे बस अचानक फिर से वहीं से गुज़रती और फिर से गुज़रती और फिर से गुज़रती, लगा पेपर नहीं दे पाऊँगा कई घंटे बीत गए फिर जाकर सेंटर पर पहुँचा। वहाँ भी

Sample Copy. Not For Distribution.

दस घण्टे खड़े रहने के बाद तब जाकर क्लास का पहला लड़का मिला, पूछा क्या टाईम हुआ है? उसने कहा 12 बजे हैं। मैं हैरान था कि सूरज निकले 16 घण्टे हो गए हैं।

और अभी 12 ही बजे हैं पेपर दो बजे का है फिर चार घंटे और बीत गए दोस्त और कहीं चला गया था। फिर जाकर और लड़के आए, ऐसा लगा रहा था मुसीबत खत्म हो गई थी। प्रश्नपत्र देखा तो पता चला ठीक से कुछ लिखा ही नहीं बस लड़के नक़ल कर रहे थे पर मैं नक़ल नहीं कर रहा था।

नक़ल ना करने का फल भी भुगता मेरा पेपर खाली था पर जब क्लास रूम से निकला तो मेरा नाम सबसे ऊपर था। घर पर आया आज रात को पूरी नींद में सोया पर मुसीबत कम नहीं हुई पर डर कम हो गया।

अब कोई डर न था अब मैं घंटों सोता पर ज़िंदगी में कोई रस नहीं था। अकसर अंदर के रूम में बैठा बल्ब को देखता रहता। अभी भी घर में कोई बात नहीं करता था दिमाग में कोई सोच नहीं रहती बस यूँ ही लाईट को देखता रहता था। ऐसा लगता जैसे सारी दुनिया ने मेरा बलात्कार कर दिया हो।

ऐसे ही दो महीने गुज़र गए फिर एक दिन मेरा भाई मेरे पास आया बोला मेरे स्कूल में एक डाक्टर है उसको दिखाओगे। आज कुछ ऐसा होना था जिसकी कल्पना भी मैंने नहीं की थी।

Sample Copy. Not For Distribution.

मैंने हाँ कर दी वो बोला 10 बजे अक्षय प्रतिष्ठान स्कूल में चलना। अभी 9 बजे थे मैं 10 बजे रेडी हो गया था। वो मुझे डाक्टर के पास ले गया डाक्टर ने कई चीज़ें पूछीं उसको मैं कुछ न बता सका था। फिर जब बात पूरी हो गई तो मैं बाहर आने के लिए चला ही था कि एक आवाज़ आई मर फिर आई मर ये आवाज़ ईश्वर की थी। मेरे नीचे से ज़मीन निकल गई जो फर्श से आ रही थी। जैसे–जैसे चल रहा था आवाज़ बढ़ रही थी लोग और भी थे वहाँ पर वो नही सुन रहे थे, मारे डर के मैं वहाँ से तेज़ी से निकल गया और स्कूल से बाहर आ गया, सोचा अब बच गया हूँ।

लेकिन भगवान तो भगवान है जिसका सामना तो करना ही था। सोच रहा था कि अकेले में इस दफा फाँसी लगाऊँगा। बस बड़े कमरे में सोचता हुआ घुसा था, भाई रसोई की तरफ गया था कि तभी मेरी आँखे फटी रह गई मेरे पापा सामने से आ रहे थे जिसमें से शिव सचमुच दिख रहे थे जो पापा से लंबे थे सर पर जटाएँ थीं और चाँद भी जटाओं से दिख रहा था जो बहुत क्रोध में थे और बोले पानी पी ले मैंने बिना प्यास के बोतल ले ली।

पानी पीने के बाद पापा बोतल लेकर चले गए और फिर शिवजी नहीं दिखे सोचने लगा कि पैर पकड़ लेता तो सारी मुसीबत खत्म हो जाती पर क्रोध के कारण नहीं कर सका फिर सोचने लगा कि नरक तो अब पक्का ही है मरने के बाद, अब तो मरना ही नहीं है तो लगा कि काश मैं अपने कर्म यहीं भोग लेता पर क्या गलत किया है मैंने

Sample Copy. Not For Distribution.

याद आया बचपन में कीड़ें मक्खियाँ मेढ़क मार देता था। मारता क्या था तड़पाता था फिर आत्मा की सुनी मैं अपने करम यहीं काटूँगा है भगवान! ऐसा हो जाए पर ये काम आसान नहीं था। मैंने प्रार्थना की कि मुझे नरक की यातनाओं का दर्द यहीं आ जाए फिर कहा कि हल्का सा दर्द आ जाए। फिर सोचा हल्का भी ज़्यादा हो जाएगा। बस यातनाओं की आवाज़ आए, शायद भगवान सुन रहा हो।

दर्द इतना बढ़ गया था कि नासूर हो गया अब तो सब का सहारा अपना न था हर टाईम नरक की आग डराती, सताती थी। यहीं सोचता था कि मेरे साथ ही क्यों? फिर एक दिन बैड पर बैठा था कि उंगली नाक में थी तभी एक आवाज़ आई तेरी नाक का बेसन ये आवाज़ दिमाग़ में आई जो संजय दत्त की थी। अब क्या था कभी सनी दियोल तो कभी सलमान खान की बातें आती थीं जो मुझे कभी हँसाती तो कभी रूलाती। लोग और परिवार वाले सोचते पागल हो गया है तभी अपने आप हँसता रहता है। अकसर बाहर जाते वक़्त लोग पूछते ठीक है कोई मुझसे बातें करता तो कुछ समझ नहीं पाता क्योंकि हीरो हिरोइन की बातें दिमाग़ में आती रहती थीं।

सभी दोस्त दूर थे बस अब आवाज़ों का सहारा था। आवाज़ें भी तब ही बंद होती थी जब मैं सो जाता था। शुरू में लगा भगवान ही बोल रहे हैं पर धीरे–धीरे लगा कि ये आवाज़ें फिल्म स्टार की ही हैं। उन्हीं आवाज़ों से पता चला कि लोगों में एक शक्ति होती है जिससे वो

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

इन्सान की शक्ति

आज चार दिन हो गए थे मुम्बई में एक औरत ने एक रोटी पर एक अचार सा कुछ रख कर दिया, बोली मैं तेरी खाला हूँ। रोटी खाए हुए चार दिन हो गए हैं। रोटी भी लगती थी चार की बासी हैं जो सफेद थी बस खा ली घर पर होता तो दस ही खा जाता यहाँ तो एक ही थी। दिमाग में एक आइडिया आया कि चार गिलास पानी लूँ तो पेट भर जाएगा, जानता था कि मर भी सकता हूँ रोटी पर जो अचार सा रखा था वो साँप का मुँह था। उस औरत ने साँप का मुँह मुझे दिया था। बाकी हिस्सा अपने बच्चों को दे दिया उसका आइडिया काम कर गया। मेरा पेट भर गया।

लेखक से संपर्क के लिए :
yogeshgandas80@gmail.com

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-1-5457-1317-4
9 781545 713174 >

EDUCREATION
PUBLISHING
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.